Volume : 5 | Issue : 2 | February 2016 • ISSN No 2277 - 8179

Research Paper

Literature

KEYWORDS :

पदमावत् का उत्तरकालीन रोमांस कथा–काव्य

डॉ. सुमन कुमारी

असि. प्रो. (हिन्दी)ए राजकीय महाविद्यालय, चम्पावत, (उत्तराखण्ड)

हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य का सबसे पहला प्राप्त ग्रंथ ''पदमावत्'' है। कलात्मक उत्कर्श काल में हिन्दी को सबसे पहले लम्बे–लम्बे व्याख्यान हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य ने ही दिये है। प्रारम्भकाल में अवष्य कुछ व्याख्यान लिखे थे, परन्तु उनके स्वरूप पर एक गहरा प्रष्नवाचक चिन्ह लगा हुआ है। प्रबन्ध सौश्ठव के दृश्टिकोण से भी वे ऐतिहासिक होने के कारण इतने सुन्दर नहीं है। पोशित चरणों द्वारा लिखे जाने के कारण वे इतने मार्मिक नहीं हो सके।1

परन्तु उनके प्रेम तथा हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य के प्रेम में पृथ्वी, पाताल का अन्तर है। वे नारी को वही स्थान देते थे, जो बादल ने अपनी पत्नी को बताया है :–

''विरिया भूमि खड़ग, की बेरी'' 2

कहॉं हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्यों में प्रेम में पागल राजकुमारों का समस्त सांसारिक वैभवों का परित्याग कर योगी के वेश में निकल पड़ना और कहॉं कारण साहित्य में तलवार के बाल से स्त्री को छीनना। प्रेमाख्यानक काव्य में नारीत्व की षोभा है।

विद्यापति का प्रेम समाज से डरता है। विद्यापति की राधा विनीत स्वर से कहती है :–

''सुन रसिया
अबन बजाउ विपिन वॅंसिया'' 1

कृश्ण भक्तों के विरूद्ध भी इनके प्रेम में सामाजिकता थी, न तो उनके नायक बचपन में चोली बन्द तोड़ना सीखते थे और न राह चलती युवतियों को छेड़नते थे।

राधा कृश्ण प्रेम लरकाई का प्रेम है, इस कारण भूलना कठिन है परन्तु हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य में यौवन का प्रेम ही इतना दृढ़ है कि कभी भी नहीं भूला जा सकता और नायिकाऍं कहती हैं :–

''यदि जग काह जो अछहि न आधी ।
हम तुम नाथ दुहूॅं जग साथी।।''2

कृश्ण भक्तों ने दम्पत्ति–प्रेम को आत्मा परमात्मा के बीच मानकर पवित्र माना परन्तु हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य ने उनके निखरे धुले स्वरूप को ही पवित्र मान लिया। यों कृश्ण भक्तों एवं हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्यद्वारों के प्रेम में विषेश अन्तर नहीं है।

हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य ने रामचरित मानस की अपेक्षा कम से कम पचास वर्श पहले अवधी भाशा में बड़े–बड़े चरित्र काव्यों की रचना की। रामचरित मानस पुराण ाों की षैली पर है। प्रेमाख्यानक एक और मसनवी षैली पर स्तुति खंड लिखते थे। मौलिक कहानियॉं भी हिन्दी में पहली बार हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य में ही मिलती है।

तुलसी में भी प्रेम का वर्णन है परन्तु वे प्रेम सर्वथा दूसरा ही है। उसकी किसी प्रकार तुलना हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य से नहीं हो सकती। वह अति मर्यादित प्रेम है, जिसमें हिन्दू संस्कृति अपने आदर्षत्मक स्वरूप की झाकियॉं दिखा रही है। उनके राम की पलकों पर निमि बसते थे। हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य का प्रेम वैसा संस्कृत एवं अति मर्यादित नहीं है, जिस दोहा चौपाई वाली षैली में पदमावती लिखी गयी थी, उसी में रामचरित मानस रचा गया था।

हिन्दी प्रेमाख्यानक ने हिन्दी साहित्य को सबसे पहले महाकाव्य दिये और उन महाकाव्यों का आधार लोक कथाऐं थी, पुराण नहीं। दोहा, चौपाइयों की षैली के सबसे पहले सफल काव्य इसमें ही लिखे गये। चलती हुई अवधी भाशा का परिश्कृत स्वरूप इन आख्यानों ने हिन्दी को अपने वर्णन दिये है, जिनका सौन्दर्य कभी मलीन नहीं होने वाला है। नागमती का विरह गाथा संभवतः सदा विरत काव्य में अपना ऊॅंचा अत्यन्त ऊॅंचा स्थान रखेगी। समग्र रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी की सूफी कवियों में आपसी सर्वश्रेश्ठ है। उनका ''पदमावत्'' हिन्दी साहित्य जगत को एक अनुमोदन है। वह हिन्दी काव्य क्षेत्र का अद्भुत रत्न है। ठेठ अवधी भाशा के माधुर्य और भावों की गंभीरता की दृश्टि से यह काव्य निराला है। 'पदमावत' के अध्ययन से यह स्पश्ट हो जाता है कि जायसी का ह्रदय कैसा कोमल और 'प्रेम की पीर' से भरा हुआ था। क्या लोक–पक्ष में और क्या भगवत्पक्ष में, दोनों ओर उसकी गूढ़ता और गम्भीरता विलक्षण दिखाई देती है। हिन्दी के प्रेमाख्यानक कवियों में जो सफलता और प्रतिश्ठा जायसी को अपने इस विषाल ग्रंथ के कारण मिली है, वह किसी अन्य को नहीं मिली। अवधी की ग्रामीण बोली की मिठास से रस भी ना यह बृहत प्रेम–काव्य प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा में तो अद्वितीय है ही, इस विशय पर इस स्तर काव्य सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में दूसरा नहीं है। गरिमा में इसका नाम महात्मा तुलसी दास के ''राम चरित मानस'' के साथ लिया जाता है, इसी से हिन्दी साहित्य में जायसी के उच्च स्थान का अनुमान कियाजाता है।

REFERENCE

1. श्री परषुराम चतुर्वेदी – सूफी काव्य संग्रह | 2. डॉ0 षिवसहाय पाठक – मालिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य | 3. डॉ रवीन्द्र 'भ्रमर' – पदमावत में लोकतत्व | 4. डॉ0 विमल कुमार जैन – सूफीमत और हिन्दी साहित्य | 5. डॉ0 देवराज उपाध्याय – रोमाण्टिक साहित्य षाला | 6. डॉ0 ष्याममोहन पाण्डेय – मध्ययुगीन प्रेमाख्यान | 7. डॉ0 कमल कुलश्रेश्ठ – हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य | 8. जनार्दन मिश्र – विद्यापति